ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. NO.- 275-277
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

भारत–आसियान संबंध में पूर्व की ओर देखो नीति में आने वाली चुनौतियां : एक अध्ययन

डॉ0 पंकज चौधरी
असि0 प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कॉधला–शामली (उ0प्र0) भारत

Received-02.06.2024, Revised-08.06.2024, Accepted-15.06.2024 E-mail : pankajbali21.pb@gmail.com

सारांशः ***भारत–आसियान संबंधों का उद्देश्य आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास को सुविधाजनक बनाना और राष्ट्रों के बीच शांति और सुरक्षा बनाए रखना है। भारत आसियान–भारत सहयोग केंद्र के संस्थापक सदस्यों में से एक था, जिसकी स्थापना 1995 में भारत और आसियान के बीच हस्ताक्षरित एक समझौते के तहत की गई थी। भारत ने अपने स्वतंत्रता आन्दोलन में कुछ प्रमुख सिद्धान्तों जैसे उपनिवेशवाद का विरोध, रंगभेद विरोध, साम्राज्यवाद विरोध, समानता, स्वतंत्रता आदि के आधार पर दूसरे समकक्ष राष्ट्रों की स्वतंत्रता की भी बात उठायी। भारत की पूर्व की ओर देखो नीति, दक्षिण–पूर्व एशिया के देशों के साथ आर्थिक और सामरिक संबंधों को मज़बूत करने के लिए बनाई गई थी। इस नीति का मकसद भारत को एक क्षेत्रीय शक्ति बनाना और इस इलाके में चीन के प्रभाव को संतुलित करना था. प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव की सरकार ने 1991–1996 के दौरान इस नीति को विकसित किया थाद्य अटल बिहारी वाजपेयी (1998–2004) और मनमोहन सिंह (2004–2014) के कार्यकाल में इस नीति का सख्ती से पालन किया गया। साल 2014 में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक्ट ईस्ट नीति की घोषणा की गई, जो लुक ईस्ट नीति की उत्तराधिकारी बनी, लेकिन नीति बनने के साथ इसकी कई समस्याओं का सामना कारना भी पड़ा, जिसकी चर्चा इस शोध पत्र में की गयी है।***

कुंजीभूत शब्द– आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक विकास, उपनिवेशवाद, रंगविरोध, साम्राज्यवाद, समानता, लुक ईस्ट नीति

प्रस्तावनाः आसियान दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों का एक समूह है, जो आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और अपने क्षेत्रों में स्थिरता स्थापित करने के लिए काम करता है। आसियान के जरिये भारत बहुत से देशों से संवाद कायम कर सकता है और इसके जरिये अपने नजरिये को दुनिया के सामने रख सकता है। भारत की यही कोशिश है क्योंकि भारत–आसियान को लेकर द्विपक्षीय महत्व का यह सबसे महत्वपूर्ण बिंदू है। 1992 से पूर्व में भी भारत की सक्रियता में आसियान महत्वपूर्ण रहा है। तत्कालीन प्रधानमंत्री पीवी नरसिंहा राव ने 'लुक ईस्ट' नीति की शुरूआत की थी, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने एक्ट इस्ट का नया नाम दिया है। भारत और आसियान के कार्यकारी सहयोग गहरे और विस्तृत हुए हैं। क्षेत्रों के संदर्भ में आसियान भारत सहयोग में, व्यापक क्षेत्र शामिल किए गए हैं जैसे– व्यापार, निवेश, पर्यटन, मानव संसाधन विकास, विज्ञान एवं तकनीक तथा जनता का जनता से संपर्क आदि। अभिनव रूप से इस सहयोग में कुछ अन्य क्षेत्र भी शामिल किए गए हैं जैसे स्वास्थ्य परिवहन और आधारभूत संरचना, लघु और मध्यम आकार के उधम, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तथा कृषि। आसियान–भारत सहयोग की अधिक परियोजनाएं विज्ञान व तकनीक के क्षेत्र में है।[1]

पूर्व की ओर देखो नीति भारत द्वारा द० पू० एशिया के देशों के साथ बड़े पैमाने पर आर्थिक और सामरिक संबंधों को विस्तार देने, भारत को एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करने और इस इलाके में चीन के प्रभाव को संतुलित करने के उद्देश्यों से बनाई गई नीति है। वर्ष 1991 में पीवी नरसिम्हा राव सरकार द्वारा शुरू की गयी इस नीति के साथ ही भारत के विदेश नीति के परिप्रेक्ष्यों में एक नई दिशा और नए अवसरों के रूप में देखा गया और वाजपेयी सरकार तथा मनमोहन सरकार ने भी इसे अपने कार्यकाल में लागू किया।

वस्तुतः यह नीति शीत युद्ध की समाप्ति के बाद उभरे नए वैश्विक और क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्यों, शक्ति संतुलन और भारत की नई आर्थिक नीतियों के साथ विदेश नीति के समन्वय की अवधारणा का परिणाम है, जिसके मूल रूपरेखाकार के रूप में तत्कालीन वित्त मंत्री मनमोहन सिंह जी को देखा जाता है। यह इन क्षेत्रों के साथ नए रिश्ते बनाने की शुरुआत नहीं थी बल्कि प्राचीन काल के, किन्तु एक दीर्घअवधि से उपेक्षित, रिश्तों को पुनर्जीवित करने की कोशिश थी।

हाल के नतीजों को देखा जाय तो इस बात को स्वीकार करने के कई कारण हैं कि भारत को इस नीति से लाभ और हानि दोनों हुआ है और वह इस नीति के द्वारा अपने संबंध इन पूर्वी देशों से मजबूत करने में सफल रहा है। जिस तरह भारत 'पूर्व की ओर देखो' की नीति अपनाए हुए हैं। उसी तरह थाईलैंड "पश्चिम की ओर देखो" की नीति अपनाए हुए हैं और ये दोनों नीतियां एक ही बिन्दु पर मिलती हैं। लुक ईस्ट पालिसी की अगले चरण के रूप में सन् 2014 में नरेन्द्र मोदी ने एक्ट ईस्ट नीति का आरम्भ किया।[2] एक्ट ईस्ट नीति में प्रारम्भ से ही इसमें निहित संभावनाओं के साथ–साथ अनेक समस्याएं विद्यमान रही हैं। इनमें से कुछ प्रमुख समस्याएं निम्नलिखित हैं।

समस्याएं– दक्षिण पूर्व एशिया में स्थित राज्यों की भिन्न–भिन्न राजनीतिक व्यवस्थाएं, संचार सम्पर्क तथा बढ़ते क्षेत्रीय संगठनों ने एक्ट ईस्ट नीति के लिए समस्याओं को जन्म दिया है एवं हिन्द–प्रशांत में चीन की विस्तारवादी नीति ने भारत के लिए समस्याएं उत्पन्न की है। इसके अतिरिक्त चीन भारत की ऐसी किसी भी नीति का विरोध करता रहा है, जो चीन की बढ़ती शक्ति एवं इसकी विस्तारवादी नीति के लिए बाधक बनें।

आसियान राज्यों की विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाएं– आसियान राज्यों की राजनीतिक व्यवस्थाएं एक दूसरे से भिन्न हैं, जिस कारण 'एक्ट ईस्ट पालिसी' को समान रूप से आसियान के सभी राज्यों के साथ लागू करने में समस्याएँ उत्पन्न होती है। म्यांमार में फरवरी 2021 से सेना का शासन लागू है। थाईलैण्ड में संवैधानिक राजतंत्र की शासन व्यवस्था है। ब्रुनेई में एक पूर्ण

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

राजशाही है जिसमें सुल्तान समस्त शक्तियों का प्रयोग करता है। राष्ट्रीय स्तर पर यहाँ कोई निर्वाचित सरकार नहीं है। वियतनाम एक समाजवादी गणराज्य है जिसमें वियतनाम की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में एक दलीय शासन प्रणाली विद्यमान है। सिंगापुर संसदीय शासन प्रणाली के साथ लोकतांत्रिक गणराज्य है। इण्डोनेशिया में अध्यक्षात्मक शासन व्यवस्था विद्यमान है। इस प्रकार आसियान के सभी राज्यों की राजनीतिक व्यवस्थाएं एक दूसरे से अलग हैं, जो भारत की एक्ट ईस्ट नीति के सामने एक समस्या के रूप में सामने आती है, क्योंकि भारत इसके कारण आसियान के सभी राज्यों के साथ एक्ट ईस्ट नीति को लेकर साम्यता नहीं रख पा रहा है।

संचार सम्पर्क एक्ट ईस्ट पालिसी की समस्या – यह एक अन्य समस्या है। सम्पूर्ण हिन्द–प्रशांत एक व्यापक क्षेत्र है, जिसमें आपसी सम्बन्धों को सुदृढ़ करने के लिए पर्याप्त संचार माध्यमों का होना आवश्यक है। भारत ने लुक ईस्ट पालिसी के माध्यम से विभिन्न प्रकार से संचार माध्यम स्थापित करने की प्रयास किया है। जिसमें त्रिपक्षीय–हाइवे सड़क परियोजना, कालादान मल्टी मॉडल प्रोजेक्ट, रेल संचार आदि प्रमुख है, जो भारत को आसियान के राज्यों से जोड़ते हैं।

भारतीय शिथिलता– एक्ट ईस्ट पालिसी भारत की विदेश नीति लुक ईस्ट पालिसी का एक अगला चरण है जिसके माध्यम से भारत आसियान तथा हिन्द प्रशांत क्षेत्र में क्षेत्रीय शक्ति के रूप में एक बड़ी भूमिका निभाना चाहता है। एक्ट ईस्ट पालिसी के सामने एक बड़ी समस्या इस नीति को लेकर भारत के स्वयं की इच्छाशक्ति और भ्रमपूर्ण स्थिति है। लुक ईस्ट पालिसी में आई इस शिथिलता को खत्म करने के लिए भारत ने एक्ट ईस्ट पालिसी अपनाई थी, वह शिथिलता अभी भी इस नीति में विद्यमान है। उदाहरण स्वरूप पहला, सी०एल०एम०वी० (कंबोडिया, लाओस, म्यांमार, वियतनाम) देशों को भारत की तरफ से दिये जाने वाले डिजिटल कनेक्टीविटी अनुदान से सम्बन्धित है। इसके अंतर्गत लाओस ने विभिन्न परियोजनाओं के लिए क्रेडिट लोन के लिए भारत को औपचारिक अनुरोध भेजे थे, किन्तु भारतीय "Exim" बैंक द्वारा कोई उचित प्रतिउत्तर नहीं दिया गया। दूसरा, कालादान मल्टी मॉडल प्रोजेक्ट है, जिसको पूर्ण करने में भारत की तरफ से देरी की जा रही है। कालादान मल्टी मॉडल प्रोजेक्ट को सन् 2003 में आरम्भ किया गया, इसको सन् 2014–15 में पूर्ण किया जाना था, किन्तु ऐसा संभव न हो सका। यद्यपि वर्तमान में यह अपने अन्तिम चरण में है जिसे सन् 2020–21 में पूर्ण होना सुनिश्चित किया गया था।'[3]

हिन्द प्रशांत क्षेत्र एवं जल दस्युता रूहिन्द प्रशांत क्षेत्र राजनीतिक व आर्थिक रूप से विभिन्नताओं का क्षेत्र है, जिसमें अनेक कमजोर राज्य भी सम्मिलित है। ऐसे में हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, व्यापार आवागमन, समुद्री संचार मार्ग, समुद्री आतंकी गतिविधियाँ आदि भारत की एक्ट ईस्ट पालिसी के सामने समस्याओं के रूप में विद्यमान है। हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में स्थित राज्यों के बीच जातीयता, धार्मिक व भाषाई आधार पर काफी भिन्नताएं हैं। आर्थिक रूप में हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में भारतीय हित अंतर्निहित है। जल–दस्युता हिन्द महासागर तथा मलक्का की खाड़ी प्रमुख समस्या है। जल दस्युता एवं हथियारों की चोरी पहले बंदरगाहों या क्षेत्रीय जल सीमाओं के अन्दर होती थी किन्तु वर्तमान में यह जलदस्युता अंतर्राष्ट्रीय जल सीमा क्षेत्र में पहुँच चुकी है, जो सभी देशों के लिए चिंता का विषय है। हिन्द प्रशांत क्षेत्र में चीन पहले से ही यहाँ अपनी शक्ति निरंतर बढ़ा रहा है। दक्षिण चीन सागर में चीन अपने कृत्रिम द्वीपों का निर्माण कर रहा है। जिसके कारण इस मार्ग से होने वाला भारतीय व्यापार प्रभावित हो रहा है।

दक्षिण चीन सागर विवाद एवं भारतीय हित– वर्तमान समय में दक्षिण चीन सागर हिन्द प्रशांत में स्थित ऐसा जल क्षेत्र है, जहाँ कच्चा तेल और प्राकृतिक गैस पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। यही कारण रहा है कि विश्व के अनेक देशों के मध्य दक्षिण चीन सागर आपसी हितों के टकराव का क्षेत्र बना हुआ है। एक्ट ईस्ट पालिसी के माध्यम से भारत आसियान के साथ सामरिक सम्बन्ध बढ़ा रहा है। ऐसे में अगर चीन, दक्षिण चीन सागर पर एकाधिकार बना लेगा, तो भारत का दक्षिण चीन सागर के सीमावर्ती आसियान राज्यों के साथ सम्बन्ध बिगड़ सकते हैं। 19 अप्रैल 2011 को चीन में प्रकाशित समाचार पत्र ग्लोबल टाइम्स ने अपनी रिपोर्ट में दक्षिण चीन सागर को दूसरा फारस की खाड़ी की संज्ञा दी है, जहाँ पच्चास बिलियन टन कच्चा तेल तथा बीस ट्रिलियन क्यूबिक मीटर प्राकृतिक गैस का भण्डार है।[4]

दक्षिण चीन सागर को लेकर चीन का वियतवाम व ब्रुनेई से द्विपक्षीय विवाद है। चीन के इस एकाधिकार को ब्रूनेई, मलेशिया, फिलीपींस, ताइवान, वियतनाम आदि ने अस्वीकार करते हुये इसका विरोध किया है। पारासल तथा स्पार्टली द्वीप को लेकर चीन तथा वियतनाम में संघर्ष है तथा नतूना द्वीप को लेकर चीन के साथ इण्डोनेशिया का द्विपक्षीय विवाद है। पारासल, 130 छोटे–छोटे द्वीपों का एक द्वीप समूह जो चीन और वियतनाम से लगभग समान दूरी पर स्थित है, जिस पर चीन और वियतनाम दोनों देश अपने प्रभुत्व का दावा कर रहे हैं। इस बात को लेकर दोनों देशों में विवाद की स्थिति बनी हुई है। स्पार्टली द्वीप को लेकर चीन के साथ ताइवान, फिलीपीस, वियतनाम का विवाद है।

'नाइन डैश लाइन का संदर्भ देकर चीन, दक्षिण चीन सागर पर अपना एकाधिकार का दावा करता है, साथ ही फिलीपींस, वियतनाम, मलेशिया आदि सीमावर्ती प्रदेश की दक्षिण चीन सागर में अपना दावा पेश करते हैं। चीन द्वारा जारी की गई नाइन डैश लाइन संयुक्त राष्ट्र कनवेन्शन के अनुसार फिलीपींस, मलेशिया, बुनेई, वियतनाम के संप्रभु क्षेत्र में आती है। परिणामस्वरूप फिलीपींस ने 2016 में इस विवाद को लेकर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में एक याचिका दायर की, जिसमें फिलीपींस के अधिकारों को उचित मानते हुए निर्णय फिलीपींस के पक्ष में सुनाया गया। यद्यपि चीन ने अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा दिये गये निर्णय को मानने से अस्वीकार कर दिया।

स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स, (मोतियों की माला)–मोतियों की माला हिन्द महासागर में चीन द्वारा आरम्भ की गई एक भू–राजनीतिक अवधारणा है, जो चीन की मुख्य भूमि को अफ्रीका में महाद्वीप से जोड़ता है। इसमें मंडेब जलडमरू मध्य, होर्मूज

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- II, Issues-28, YEAR- April-June-2023

जलडमरू मध्य, मलक्का जलडमरू मध्य तथा लोम्बोक जलडमरू मध्य आ जाते हैं। मोतियों की माला के अन्तर्गत इस पूरे क्षेत्र में चीन अपनी सैन्य व आर्थिक परियोजनाओं को संचालित कर रहा है।

मोतियों की माला भू–राजनीतिक शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 2005 में अमेरिकी रक्षा विभाग ने 'एशिया में ऊर्जा भविष्य' नामक दस्तावेज में किया, जिसको बूज ऐलन द्वारा तैयार किया गया।[5] अमेरिका रक्षा विभाग द्वारा प्रकाशित इस दस्तावेज के पश्चात् इस शब्द को भारतीयों द्वारा अधिक प्रचारित किया गया। चीन की ऊर्जा आवश्यकता की अधिकतम आपूर्ति पश्चिम एशिया से होता आया है। इस कारण हिन्द महासागर के समुद्री मार्गों पर चीन की निर्भरता बढ़ी है। फलस्वरूप चीन ने हिन्द महासागर के आस–पास स्थित देषों में अपने बंदरगाह बनाना आरम्भ किया। इस क्रम में चीन पाकिस्तान में ग्वादर बंदरगाह श्रीलंका में हबनटोटा बंदरगाह, बंग्लादेष में चिटगांव बंदरगाह का निर्माण कर रहा है। इसके अतिरिक्त म्यांमार के राखिन प्रांत में कायापूची बंदरगाह का निर्माण कर रहा है। मानचित्र में चीन की इन परियोजनाओं को देखने से स्पश्ट होता है कि चीन की इन परियोजनाओं से निर्मित मोतियों की माला स्पश्ट रूप से भारत को पूर्व से पष्चिम तक घेरती है और अगर इसमें चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा को सम्मिलित करते हैं तो भारत चीन द्वारा निर्मित मोतियों की माला से पूरी तरह घिर जाता है।

शोध उद्देश्य–

1. भारत और आसियान के संबंधो के बीच आने वाले समस्याओं को परखना।
2. भारत की विदेश नीति की पडताल एवं उसकी भविष्य में संभावना को जांचना।
3. भारत की एक्ट ईस्ट नीति की सार्थकता को परखना।

आगे की राह – भारत और आसियान –भारत और आसियान के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय मूल्य शृंखलाएँ बनाने की ज़रूरत है। भारत दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक और दूसरा सबसे बड़ा खाद्यान्न उत्पादक है। क्षेत्रीय मूल्य शृंखलाएँ खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र और कृषि क्षेत्र में मूल्य जोड़ सकती हैं।

1. डिज़ाइन, इंजीनियरिंग, अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में और अधिक सहयोग करें।
2. प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, संयुक्त उपक्रम और भागीदारी से लघु और मध्यम उद्यमों के बीच सहयोग को बढ़ावा दें।
3. भारत और आसियान के बीच आर्थिक संबंधों में तेज़ी से वृद्धि के लिए परिवहन, बैंकिंग, सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएँ और पर्यावरण सेवाओं जैसे क्षेत्रों पर अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है।
4. जापान भारत के उत्तर पूर्व में विकास में मदद करने के लिए परियोजनाओं में निवेश कर रहा है। वर्तमान पीएम मोदी के नेतृत्व में, भारत का मानना है कि उत्तर पूर्व दक्षिण पूर्व एशिया और पूर्वी एशियाई देशों का प्रवेश द्वार है।
5. एयर कनेक्टिविटी, लैंड कनेक्टिविटी और समुद्री सुरक्षा पर अधिक ज़ोर दें क्योंकि दुनिया के व्यापार का एक बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से होकर गुज़रता है।
6. सभ्यता के मोर्चे पर, नए संपर्क और संपर्क बनाने के लिए बौद्ध और हिंदू संबंधों को बढ़ावा दिया जा सकता है।[6]

निष्कर्ष– लुक ईस्ट पॉलिसी या पूर्व की ओर देखो नीति पूर्व एशियाई क्षेत्र में मजबूती करने की भारत की सामरिक आर्थिक नीतियों में से एक है। इस नीति के तहत भारत का प्रयास इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को काटना है। दूसरे शब्दो में, लुक ईस्ट पॉलिसी दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के साथ व्यापक आर्थिक और सामरिक संबंधो को विकसित करने का प्रयास है। ताकि इस क्षेत्र में क्षेत्रीय शक्ति के रूप में खुद को स्थापित किया जा सके। इसकी शुरूआत 1991 में हुई और इसे प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिम्हा राव के शासन काल में विकसित और लागू किया गया। हालांकि बाद की अटल बिहारी वाजपेयी और मनमोहन सिंह और अब मोदी सरकार ने भी इसे कड़ाई से अपनाया।

भारत के सामरिक समीकरणों में आसियान अच्छा–खासा महत्व रखता है। आसियान भारत के लिए पूर्वी एशिया की दुनिया की ओर खलता मार्ग है जिसमें म्यांमार भारत और इसके पर्वी पडोसियों के भारत के सामरिक समीकरणों में आसियान अच्छा–खासा महत्व रखता है। आसियान भारत के लिए पूर्वी एशिया की दुनिया की ओर खुलता मार्ग है जिसमें म्यांमार, भारत और इसके पूर्वी पड़ोसियों के बीच पुल की तरह है। वर्ष 2017 में वार्ता सहयोगी के रूप में भारत ने आसियान के साथ 25 वर्ष पूरे कर लिये है। चीन ने जिस तरह से भारत के पड़ोसी देशो बांगलादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल आदि में अपना दखल बढाया है उसी तरह भारत को भी अपना दखल दक्षण–पूर्वी एशियाई देशों में बढ़ाने की जरूरत है। लेकिन चीन के काउंटर में हमें यह बात कतई नहीं भूलनी चाहिए कि किसी भी देश से भारत के संबंधो का अपना स्वतंत्र महत्व हो, न कि यह सब चीन के कारण हो। दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत के राजनैतिक, आर्थिक, सामरिक और सांस्कृतिक संबंध अब बहुत मजबूत हो चुके है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यादव आर० एस०, भारत की विदेश नीति एक विश्लेषण किताब महल, नई दिल्ली, 1999, पृष्ठ संख्या–123.
2. दीक्षित जे० एन०, भारतीय विदेश नीति, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली, 2003, पृष्ठ संख्या–56.
3. खन्ना वी० एन०, लिपाक्षी अरोड़ा, भारतीय विदेश नीति, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ संख्या–61
4. वाजपेयी अरुणोदय, समकालीन भारतीय राजनीति प्रमुख मुद्दे और चुनौतियां, पियर्सन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृष्ठ संख्या–42.
5. सिंह रहीस, वैश्विक सम्बन्ध, पियर्सन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ संख्या–34.
6. भारत और आसियान सम्बन्ध, वर्ल्ड फोकस, जुलाई 2014, पृष्ठ संख्या–68.

*****